

स्वास्थ्य और जलवायु

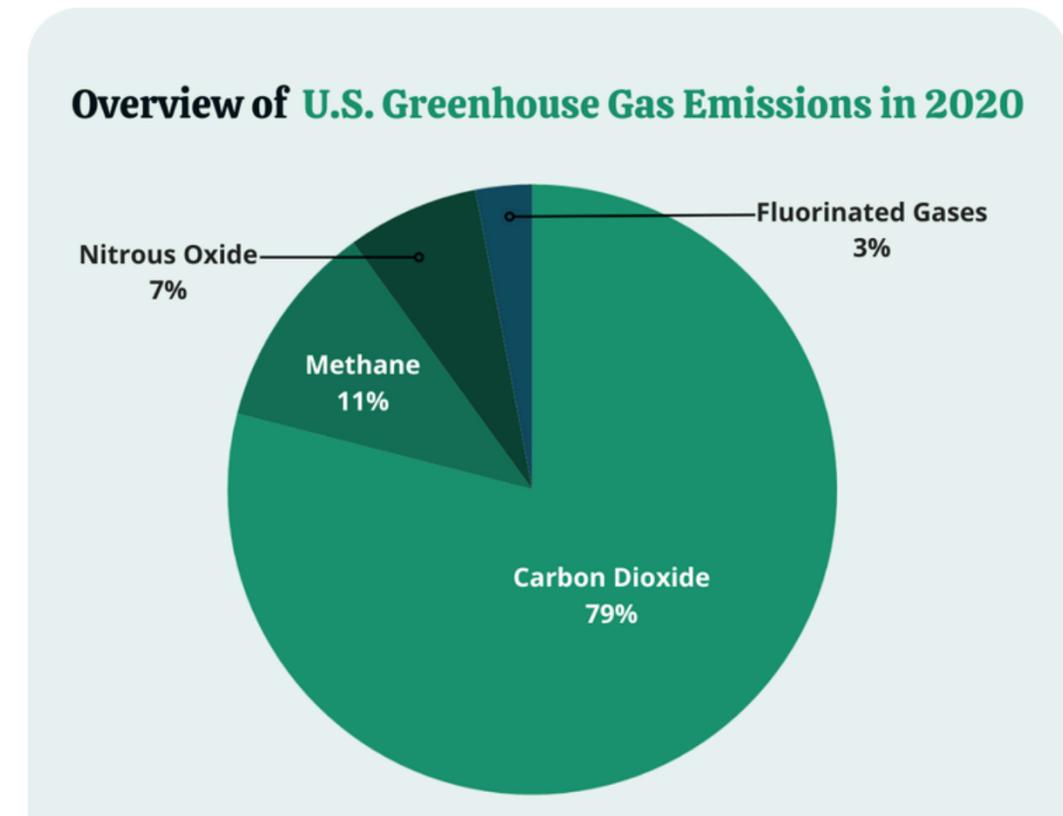
प्रदूषण

विश्व में मीथेन उत्सर्जन करने में अमेरिका सबसे आगे

पर्यावरण डेटा कंपनी कैरोस ने अपने एक व्यापक अध्ययन में कहा है कि अमेरिका वायुमंडल में दुनिया की सबसे खतरनाक ग्रीनहाउस गैस को सबसे अधिक मात्रा में छोड़ रहा है



- अमेरिका की एक पर्यावरण डेटा कंपनी कैरोस ने अपने एक रिसर्च में पाया है कि अमेरिका वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैस को सबसे अधिक मात्रा में छोड़ रहा है।
- नए शोध के अनुसार अमेरिका में मीथेन उत्सर्जन में निरंतर वृद्धि होती जा रही है।
- यह मीथेन उत्सर्जन में वृद्धि जलवायु पर खतरे का सबसे बड़ा संकेत है।
- न्यूयॉर्क टाइम्स के अनुसार अमेरिका निरंतर उत्सर्जन में कटौती करने का वादा करता रहा है किंतु दूसरी ओर इसने निरंतर वृद्धि होती जा रही है



- अमेरिका अपने नेतृत्व में जहां अन्य देशों को वैश्विक स्तर पर उत्सर्जन में कटौती करने के लिए प्रोत्साहित करने का प्रयास कर रहा है तो वहीं अमेरिका में बढ़ता जीवाश्म ईंधन उद्योग वायुमंडल में अधिक से अधिक मीथेन उत्सर्जित करता जा रहा है।
- मीथेन सबसे शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैसों में से एक है और इस अध्ययन में यह बात निकलकर आई है कि सबसे खराब प्रदर्शन करने वालों में से एक अमेरिका है।
- अभी तक जलवायु परिवर्तन से सामना करने के लिए दुनिया के अधिकांश प्रयास कार्बन डाइऑक्साइड गैस के उत्सर्जन को नियंत्रित करने पर केंद्रित रहे हैं।
- कार्बन डाइऑक्साइड मुख्य रूप से कोयला, तेल और गैस जैसे जीवाश्म ईंधन के जलने से उत्पन्न होते हैं
- जबकि मीथेन उत्सर्जन खपत से नहीं बल्कि गैस के उत्पादन व परिवहन से होता है।

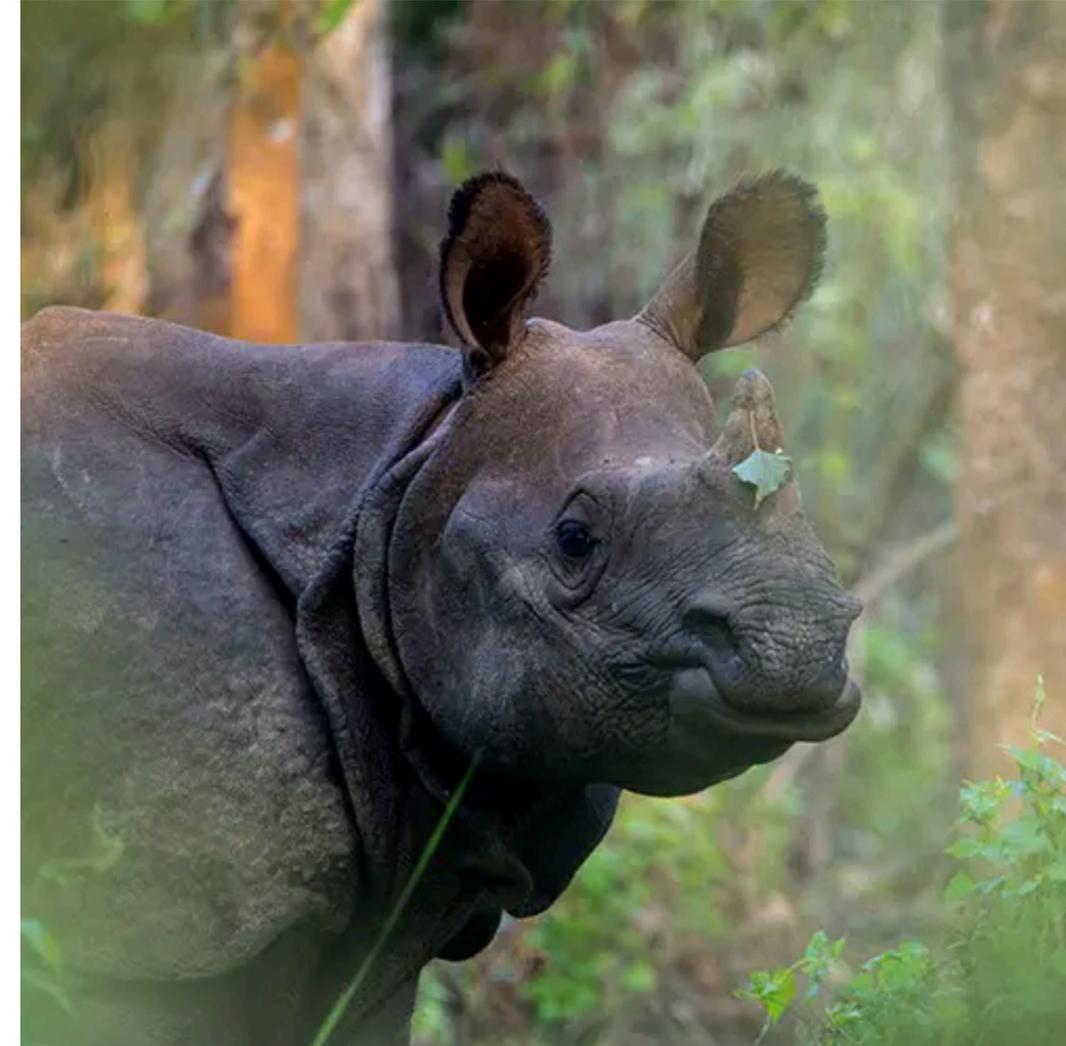
- यह आमतौर पर प्राकृतिक गैस के रूप में जानी जाने वाली गैस का मुख्य घटक है।
- मीथेन भंडारण सुविधाओं, पाइपलाइनों और टैंकों से लीक हो सकती है और अक्सर जानबूझकर छोड़ा भी जाता है।
- मीथेन पशुधन और लैंडफिल से भी निकलता है। साथ ही आर्द्रभूमि में स्वाभाविक रूप से होता है।
- वायुमंडल में मीथेन की सांद्रता अब पूर्व-औद्योगिक स्तरों से ढाई गुना अधिक है और दुनिया के आधे से अधिक मीथेन उत्सर्जन मानव निर्मित है।
- अध्ययन में ऑस्ट्रेलिया और तुर्कमेनिस्तान ही दो ऐसे देश थे, जिन्होंने मीथेन उत्सर्जन में बड़ी कमी देखी।
- कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2), मीथेन (CH_4), नाइट्रस ऑक्साइड (N_2O), ओजोन (O_3), और क्लोरोफ्लोरोकार्बन (CFCs), जल वाष्प के साथ ग्रीनहाउस गैसों के रूप में जाने जाते हैं।

"स्टेट ऑफ द राइनो 2024 रिपोर्ट"

- किसने जारी की :- इंटरनेशनल राइनो फाउंडेशन (IRF) ने
- (IRF) विश्व भर की गैंडा प्रजातियों के अस्तित्व को बचाने के लिए कार्य कर रहा है।

संगठन की स्थापना :- 1991

- पहले इस संगठन को केवल ब्लैक राइनो के संरक्षण के लिए स्थापित किया गया था।
- 1993 में इस संगठन का विस्तार किया गया और राइनो की सभी पांच प्रजातियों को शामिल कर लिया गया ।
- राइनो को हिंदी में गैंडा कहा जाता है



- वर्तमान में दुनिया में लगभग 28,000 गैंडे हैं (सभी पांच प्रजातियों को मिलाकर)।
- अफ्रीका में 2022 से 2023 के बीच गैंडों के अवैध शिकार के कारण 4% की कमी दर्ज की गई है।
- दक्षिण अफ्रीका अपने सफेद गैंडों के लिए लोकप्रिय है।
- तो बही भारत एक सींग वाले गैंडा के लिए जाना जाता है।

गैंडा :-

- इनकी 5 प्रजातियां पाई जाती है
- दो प्रजातियों का संबंध अफ्रीकी उपमहाद्वीप से है जबकि तीन प्रजातियों का संबंध एशिया महाद्वीप से है
- दो अफ्रीकी प्रजातियां :- सफेद गैंडा और काला गैंडा
- तीन एशियाई प्रजातियां :- भारतीय गैंडा, सुमात्राई गैंडा और जावा गैंडा।

भारतीय गैंडा: वल्नरेबल

- वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की अनुसूची-1 में सूचीबद्ध ।
- सुमात्राई गैंडा: क्रिटिकली एंडेंजर्ड।
- जावा गैंडा: क्रिटिकली एंडेंजर्ड।
- सभी एशियाई गैंडा प्रजातियों में भारतीय गैंडा सबसे बड़ा माना जाता है।
- भोजन :- घास, झाड़ियों और पत्ती।

प्राइम एस्ट्रोनॉट शुभांशु शुक्ला

- चर्चा में क्यों :- हाल ही में शुभांशु को इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन के लिए प्राइम एस्ट्रोनॉट के रूप में चुना गया है।
- जबकि प्रशांत नायर बैकअप के रूप में चुने गए है ।
- शुभांशु शुक्ला 38 साल के है।
- वे भारतीय एयरफोर्स में फाइटर पायलट और कॉम्बेट लीडर हैं।
- उन्हें लगभग 2000 घंटे से ज्यादा की उड़ान का अनुभव है।
- इनके द्वारा मिग-21, मिग-29, सुखोई-30MKI, जगुआर, हॉक, डॉर्नियर और एएन-32 जैसे विमानों को उड़ाने का रिकॉर्ड है।



- अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन :-
- यह पृथ्वी की कक्षा में स्थित एक बड़े अंतरिक्ष यान के रूप में है।
- यह निवास स्थान के रूप में कार्य करता है जिसमें अंतरिक्ष यात्रियों और दल के रहने की व्यवस्था होती है।
- इस अंतरिक्ष स्टेशन में पाँच अंतरिक्ष एजेंसियों के बीच एक सहयोग था: **NASA** (अमेरिका) , **Roscosmos** (रूस) , **JAXA** (जापान) , **ESA** (यूरोपियन यूनियन) और **CSA** (कनाडा) ।
- अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन को अलग-अलग मॉड्यूल के माध्यम से बनाया गया है, तथा प्रत्येक मॉड्यूल का एक विशिष्ट उद्देश्य है।
- यह स्टेशन 1998 में लॉन्च किया गया था और 2030 तक इसके कक्षा में बने रहने की उम्मीद है।
- अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन :-
- लॉन्च :-
- 20 नवंबर, 1998 ।
- विशेषता :- यह अंतरिक्ष में मानव द्वारा निर्मित सबसे बड़ा ऑब्जेक्ट है।
- उपयोग :- अंतरिक्ष में अंतरिक्ष यात्रियों के लिए आवास के रूप में कार्य करना

- इस स्टेशन पर 2011 से नियमित रूप से लोग रह रहे हैं।
- कक्षा: अंतरिक्ष स्टेशन पृथ्वी से लगभग 400 किलोमीटर ऊपर कक्षा में स्थित है।
- गति: ISS 28,000 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से पृथ्वी के चारों ओर घूमता है। (हर 90 मिनट में पृथ्वी की परिक्रमा)
- उद्देश्य:
 1. अंतरिक्ष में अंतरिक्ष यात्रियों के लिए आवास के रूप में कार्य करना
 2. अंतरिक्ष और सूक्ष्मगुरुत्व के बारे में हमारे ज्ञान का विस्तार करना
 3. नए वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा देना।

- **भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन (Indian Space Station)**
- **भार :- लगभग 20 टन होगा**
- **विशेषता :- ISS की तुलना में बहुत हल्का ।**
- **अंतरिक्ष स्टेशन कितनी ऊंचाई पर होगा :- लगभग 400 किमी की ऊंचाई पर ।**
- **यह पृथ्वी की परिक्रमा करेगा।**
- **कार्य :- इसका उपयोग अंतरिक्ष यात्रा के लिये ना करके माइक्रो ग्रेविटी (Microgravity) से संबंधित परीक्षणों में किया जाएगा ।**
- **क्या अंतरिक्ष यात्री रह सकते है इसमें :-**
- **परियोजना के प्रारंभिक चरण के अंतर्गत लगभग 20 दिनों तक अंतरिक्ष यात्री इसमें सकेंगे।**
- **भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (Indian Space Research Organisation- ISRO) स्पेस डॉकिंग एक्सपेरिमेंट (Space Docking experiment- Spacex) पर भी काम कर रहा है।**

"बच्चों में कुपोषण की पहचान और प्रबंधन के लिए प्रोटोकॉल"



- इस प्रोटोकॉल को केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (WCD) ने स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय तथा आयुष मंत्रालय के सहयोग से लॉन्च किया है।
- यह प्रोटोकॉल आंगनवाड़ी स्तर पर कुपोषित बच्चों की पहचान और प्रबंधन के लिए विस्तृत दिशा-निर्देश प्रदान करता है।
- कुपोषित बच्चों की पहचान और उनका उपचार मिशन पोषण 2.0 का अभिन्न पहलू है।
- प्रोटोकॉल के मुख्य घटक:
 - इसमें कुपोषित बच्चों के विकास की निगरानी, एपेटाइट टेस्ट, पोषण स्थिति प्रबंधन आदि शामिल हैं।
 - एपेटाइट टेस्ट में बच्चों को शरीर के वजन के अनुसार भोजन दिया जाता है। यदि कोई बच्चा भोजन का तीन-चौथाई हिस्सा भी ग्रहण नहीं कर पाता है, तो उसे पोषण पुनर्सुधार केंद्र (NRC) में भेज दिया जाता है।
 - आवश्यक उपाय करने के बाद जो बच्चे विकास संबंधी जरूरी मानदंडों को पूरा कर लेते हैं, उन्हें बाद की देखभाल सेवाएं उपलब्ध कराई जाती हैं।
- 'बड्डी मदर (Buddy Mother)' पहल: इस पहल के तहत एक स्वस्थ बच्चे की माता हर हफ्ते आंगनवाड़ी केंद्र में एक कुपोषित बच्चे की माता का मार्गदर्शन करती है।
- 'बड्डी मदर' अवधारणा का प्रयोग सबसे पहले असम में किया गया था।
- यह आहार में विविधता लाने को प्रोत्साहित करता है तथा भोजन में सूक्ष्म पोषक तत्वों को शामिल करने की सलाह देता है।
- भारत में 5 वर्ष से कम उम्र के 7.7 प्रतिशत बच्चे गंभीर दुबलेपन से ग्रस्त हैं।